|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| 05. Oktober 2025 | | | |
| **27. Sonntag im Jahreskreis C Erntedank** | | | |
| Erste Lesung: Hab 1,2-3;2,2-4; Zweite Lesung: 2 Tim 1,6-8.13-14; Evangelium: Lk 17,5-10 | | | |
| Eröffnung: | GL 466, 1-5 | | Herr, dich loben die Geschöpfe |
|  | GL 467, 1+5+6 | | Erfreue dich, Himmel |
|  | GL 348, 1-3 | | Nun bitten wir den Heiligen Geist |
|  |  | |  |
| Kyrie: | GL 164 | | Der in seinem Wort uns hält |
|  | GL 156 | | Kyrie eleison |
| Gloria: | GL 167 | | Dir Gott im Himmel Preis uns Ehr |
|  |  | |  |
| Antwortgesang: | Psalm 95,1-2.6-7c.7d-9 | |  |
|  | Kehrvers: | |  |
|  | GL 312, 7 | | Herr, du hast Worte |
|  | oder | |  |
|  | GL 448, 2-4 | | Herr, gib uns Mut |
|  |  | | |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 7 |  | |
|  | Vers: |  | |
|  | *Das Wort des Herrn bleibt in Ewigkeit,* | | |
|  | *das Evangelium, das euch verkündet wird.* | | |
|  |  | | |
| Credo: | GL 177, 1+2 | Credo in unum Deum | |
|  |  |  | |
| Gabenbereitung: | GL 422, 1+3 | Ich steh vor dir mit leeren Händen | |
|  | GL 457, 1-3 | Suchen und fragen | |
|  | GL 474 | Wenn wir das Leben teilen | |
|  | GL 425, 1-5 | Solang es Menschen gibt auf Erden | |
|  |  |  | |
| Sanctus: | GL 193 | Heilig | |
| Agnus Dei: | GL 139 | Lamm Gottes | |
|  |  |  | |
| Danksagung: | GL 377, 1+2! | O Jesu, all mein Leben bist du | |
|  | GL 414 | Herr, unser Herr | |
|  | GL 446, 1+4 | Lass uns in deinem Namen | |
|  | GL 484, 1+5 | Dank sei dir, Vater | |
|  | GL 619, 1+2 | Alles, was Odem hat | |
|  |  |  | |
| Schluss: | GL 423, 1-3 | Wer unterm Schutz | |
|  | GL 489, 1-3 | Lasst uns loben | |
|  | GL 403, 1-4 | Nun danket all und bringet Ehr | |
|  | GL 405, 1-3 | Nun danket alle Gott | |
|  | GL 830, 1+10 | Maria, wir dich grüßen | |
|  | Marienlied oder (Schutz-)Engellied | | |